**Sarcouncil Journal of Arts and Literature**

**ISSN(Online): 2945-364X**

Volume- 02| Issue- 06| 2023

**Review Article** **Received:** 15-11-2023 | **Accepted:** 10-12-2023 | **Published:** 25-12-2023

# 'गोदान' में व्याप्त कृषक जीवन की त्रासदी: एक समीक्षात्मक अध्ययन

***डॉ नरेश कुमार वर्मा***

*सह आचार्य, राजकीय महाविद्यालय टोंक (राजस्थान)*

**Abstract**: हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का सबसे प्रभावशाली और असली कृषक जीवन का चित्रण गोदान है। यह उपन्यास केवल होरी नामक एक किसान की व्यक्तिगत कहानी नहीं है; यह औपनिवेशिक भारत के ग्रामीण समाज, सामंती प्रभुत्व, महाजनी व्यवस्था, जातिगत दबाव, धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक मर्यादा के बोझ से टूटते हुए किसानों की सामूहिक पीड़ा का कलात्मक चित्रण है। प्रेमचंद ने होरी, धनिया, गोबर, झुनिया, दातादीन, रायसाहब, महाजन और पंचायत जैसे पात्रों के माध्यम से उस ग्रामीण संरचना को खोला है जिसमें किसान काम करता है, अन्न बनाता है, परिवार और समाज को जीवित रखता है, लेकिन ऋण, भूख, अपमान और असुरक्षा से बच नहीं पाता। 'गोदान' में किसानों का दर्द सिर्फ आर्थिक अभाव नहीं है; वह सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक और मानसिक स्तरों पर भी दिखाई देती है। होरी का गाय पाने का सपना धार्मिक-सांस्कृतिक रूप से भारतीय ग्रामीण जीवन का प्रतीक है, लेकिन यह सपना उसे ऋण, बहस, सामाजिक दंड और अंततः मृत्यु तक ले जाता है। ग्रामीण महिलाओं की व्यावहारिक चेतना और उनका प्रतिरोध धनिया के संघर्ष से सामने आता है। यह समीक्षा-पत्र "गोदान" में आर्थिक शोषण, जाति-व्यवस्था, स्त्री-अनुभव, धार्मिक दबाव, ग्रामीण सत्ता-संबंध और यथार्थवादी शिल्प के संदर्भ में कृषक जीवन की त्रासदी का विश्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद ने किसानों की पीड़ा को सामाजिक संरचना की आलोचना के रूप में नहीं, बल्कि करुणा के स्तर पर प्रस्तुत किया है (लेखक, 1936; शर्मा, २००८; (राय, 2021).

**Keywords:** गोदान, प्रेमचंद, कृषक जीवन, ग्रामीण यथार्थ, होरी, धनिया, महाजनी व्यवस्था, जमींदारी, जाति-व्यवस्था, सामाजिक त्रासदी.

## प्रस्तावना

प्रेमचंद का योगदान हिंदी उपन्यास परंपरा में इसलिए महत्वपूर्ण है कि उन्होंने साहित्य को दरबारी कल्पना, रोमांच और उच्चवर्गीय भावुकता से बाहर निकालकर आम आदमी के जीवन से जोड़ा। उनके साहित्य केवल सहानुभूति के विषय नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज की वास्तविक संरचना को समझने की कुंजी हैं. उनके साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, निम्नवर्ग, दलित, शोषित और वंचित लोगों का चित्रण शामिल है। प्रेमचंद की रचनात्मक परिपक्वता का सबसे बड़ा उदाहरण 'गोदान' है। यह उपन्यास सिर्फ किसान जीवन की बाहरी झलक नहीं देता, बल्कि उस पूरे सामाजिक ढाँचे को भी दिखाता है जिसके भीतर भारतीय किसान जन्म से मरतकर संघर्ष करते हैं। इस व्यवस्था का जीवन होरी महतो का है। वह ईमानदार, श्रमशील, परिवार से जुड़ा हुआ और धार्मिक-सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा हुआ है; लेकिन वह लगातार सामाजिक और आर्थिक शक्तियों से पराजित हो जाता है (प्रेमचंद, 1936; गोपाल, वर्ष 1964)

श्रम करने के बाद भी भारतीय किसान दरिद्र क्यों रहता है, यह 'गोदान' का मुख्य प्रश्न है। वह खेत, श्रम, परिवार और उत्पादन से सीधे जुड़ा हुआ है, लेकिन लाभ और नियंत्रण किसी और के पास है। जमींदार लगान लेता है, महाजन ब्याज लेता है, पंडित धर्म के नाम पर दंड लेता है, पंचायत जाति और मर्यादा के नाम पर दबाव डालता है, और पटवारी-कानूनी तंत्र प्रशासन को डराता है। प्रेमचंद की दृष्टि में होरी की त्रासदी ऐसी व्यवस्था की देन है जिसमें किसानों की श्रम-शक्ति का निरंतर शोषण होता है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य में "गोदान" को सिर्फ एक दर्दनाक कहानी नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत की सामाजिक आलोचना माना जाना चाहिए (शर्मा, २००८; (राय, 2021)

इस समीक्षा-पत्र का लक्ष्य है कि "गोदान" में कृषक जीवन में व्याप्त दुःख का व्यापक अध्ययन करें। यहाँ त्रासदी का मतलब सिर्फ मृत्यु या आर्थिक पतन नहीं है, बल्कि उस क्रमिक सामाजिक विघटन से है जिसमें किसान अपनी मेहनत, नैतिकता, पारिवारिक जिम्मेदारी और धार्मिक आस्था के बावजूद सम्मानपूर्ण जीवन नहीं जी सकता। उपन्यास में होरी की कहानी व्यक्तिगत लगती है, लेकिन यह भी सामूहिक है। वह भारतीय किसानों की चेतना का प्रतीक है जो शोषण को जानती है, लेकिन परंपरा, जाति, मर्यादा और सामाजिक भय के कारण उससे निर्णायक संघर्ष नहीं कर पाती।

## अध्ययन की पद्धति और समीक्षा-दृष्टि

यह लेख पाठ-विश्लेषण और साहित्यिक समीक्षा पर आधारित है। प्रेमचंद का उपन्यास "गोदान" प्राथमिक स्रोत है, जबकि द्वितीयक स्रोत प्रेमचंद-साहित्य की पुरानी पुस्तकें हैं। रामविलास शर्मा की पुस्तक "प्रेमचंद और उनका युग" प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि, वर्गीय चेतना और यथार्थवादी रचनाशीलता को समझने में महत्वपूर्ण है। Munshi Premchand, मदन गोपाल: A Literary Biography और अमृत राय की "प्रेमचंद: कलम का सिपाही" प्रेमचंद की रचनात्मक पृष्ठभूमि, जीवन और व्यक्तित्व को समझने में मदद करते हैं। फ्रांसेस्का ओरसिनी की खोज हिंदी सार्वजनिक क्षेत्र और

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License



***Corresponding Author:** डॉ नरेश कुमार वर्मा

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.20158114

औपनिवेशिक काल के साहित्यिक-सामाजिक परिवेश को समझने में सहायक है (गोपाल, 1964)। शर्मा, २००८; ओरसिनी, २००२) समीक्षा-दृष्टि आलोचनात्मक और समाजशास्त्रीय है। इस दृष्टिकोण से उपन्यास को सामाजिक शक्ति-संबंधों की एक रिपोर्ट के रूप में पढ़ा जाता है, न कि सिर्फ एक कहानी, पात्र और घटना। विश्लेषण के मुख्य मुद्दे हैं: आर्थिक शोषण, जमींदारी, महाजनी ऋण, जाति-व्यवस्था, धार्मिक रूढ़ि, ग्राम-पंचायत, स्त्री-अनुभव और किसान की मनोवैज्ञानिक स्थिति। इस प्रक्रिया का लक्ष्य प्रेमचंद के यथार्थवाद को आलोचनात्मक रूप से समझना है, न कि सिर्फ वर्णनात्मक रूप में। प्रेमचंद ने किसानों की दुर्दशा को भावुकता से नहीं बल्कि उसके सामाजिक कारणों से प्रस्तुत किया है।

## प्रेमचंद, यथार्थवाद और 'गोदान' का ग्रामीण परिप्रेक्ष्य

प्रेमचंद का साहित्य औपनिवेशिक शासन, सामंती अवशेष, नवीन पूँजीवादी संबंधों और राष्ट्रीय भावना के बीच का समय है। उस समय किसानों पर सबसे अधिक दबाव था। औपनिवेशिक राजस्व व्यवस्था ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नकदी और लगान के दबाव में डाल दिया, जमींदारी ने किसानों की भूमि और श्रम पर नियंत्रण रखा, और महाजनी व्यवस्था ने किसानों को लगातार ऋण के चक्र में फँसा दिया। इन्हीं शक्तियों के बीच फँसे किसान की कहानी है 'गोदान'। गाँव को प्रेमचंद ने किसी रोमानी आदर्श जगह के रूप में नहीं चित्रित किया; उनका गाँव श्रम, भूख, आशा, अपमान, धार्मिक विचार, जातिगत भय और सामाजिक संघर्षों से बना है (प्रेमचंद, 1936)। Sharma, 2008)

यहाँ होरी का चरित्र बहुत महत्वपूर्ण है। वह परंपरागत किसान है, विद्रोही नहीं। वह जाति में रहना चाहता है, परिवार को टूटने से बचाना चाहता है, सामाजिक नियमों का पालन करना चाहता है और धार्मिक विचारों का पालन करना चाहता है। इसलिए, व्यवस्था से पीड़ित होते हुए भी वह उसे पूर्ण रूप से चुनौती नहीं देता। वह अन्याय का सामना करता है, दंड देता है, ऋण लेता है और अंततः समझौता करता है। इस चरित्र के माध्यम से प्रेमचंद दिखाते हैं कि शोषण सिर्फ बाहरी प्रेरणा से नहीं होता; भय और समाज में प्रचलित मूल्यों के माध्यम से भी वह काम करता है। इसी कारण होरी की त्रासदी व्यक्तिगत से अधिक संरचनात्मक हो जाती है।

प्रेमचंद का यथार्थवाद किसान की विडंबना और श्रम के बीच एक गहरा संबंध बनाता है। किसान भूमि पर स्वतंत्र अधिकार नहीं है, हालांकि वह भूमि से जुड़ा है। वह अन्न पैदा करता है, लेकिन भोजन की सुरक्षा नहीं मिलती। वह समाज को जीवित रखता है, लेकिन स्वयं का सम्मान खो देता है। 'गोदान' का वास्तविक अर्थ इसी विरोधाभास में है। प्रेमचंद ने किसान जीवन को सजावटी लोक-संस्कृति के रूप में कहीं भी नहीं देखा; वे शोषण, करुणा और नैतिक जटिलता को उजागर करते हैं (2021 में राय; ओरसिनी, २००४)

## आर्थिक शोषण और ऋणग्रस्त किसान की त्रासदी

'गोदान' में कृषक जीवन का आर्थिक संकट सबसे स्पष्ट त्रासदी है। होरी के पास धन है, लेकिन श्रम नहीं; खेत है, लेकिन उत्पादन पर पूरी तरह से नियंत्रण नहीं है; परिवार है, लेकिन उसकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते। गाय खरीदने की उसकी इच्छा सिर्फ पशु खरीदने की नहीं, बल्कि धार्मिक पुण्य, ग्रामीण जीवन में प्रतिष्ठा, कृषक-संपन्नता और सामाजिक सम्मान की इच्छा भी है। लेकिन यही आकांक्षा उसे ऋण और बहस में फँसा देती है। गाय, जो किसानों के जीवन में धर्म और समृद्धि का प्रतीक है, होरी के जीवन में आर्थिक संकट और सामाजिक तनाव का कारण बनती है (प्रेमचंद, 1936)।

किसानों के आर्थिक पतन का मूल तंत्र महाजनी व्यवस्था है। किसानों को हर समय पैसे की जरूरत होती है—बीज, लगान, पशु, विवाह, रोग, दंड और धार्मिक-सामाजिक रस्मों के लिए वह एक महान व्यक्ति से उधार लेता है, लेकिन ब्याज इतना बढ़ता है कि मूलधन कभी नहीं मिलता। ऋण चक्र केवल आर्थिक व्यवहार नहीं है; यह सामाजिक नियंत्रण का एक साधन भी है। किसान अपनी भविष्य की आय पहले ही सुरक्षित रखता है। इसी चक्र का प्रतिनिधित्व होरी की दशा है; वह फिर से ऋण चुकाने के लिए ऋण लेता है और अंततः उसका श्रम बंधन के बजाय स्वतंत्रता का साधन बन जाता है।शर्मा, २००८; गोपाल, वर्ष 1964)

प्रेमचंद किसानों की गरीबी को सिर्फ एक दर्दनाक चित्र नहीं दिखाते, बल्कि उसके पीछे छिपी हुई आर्थिक व्यवस्था को भी दिखाते हैं। आलसी या असमर्थ होना होरी निर्धनता नहीं है; वह लगातार मेहनत करता है। यह निर्धन है क्योंकि उत्पादन-संबंध असमान हैं। विभिन्न सामाजिक शक्तियाँ उसकी मेहनत का अतिरिक्त लाभ उठाते हैं। जमीनदार लगान लेता है, महाजन ब्याज लेता है, पंडित दंड और दक्षिणा लेता है, और समाज मर्यादा के लिए खर्च करता है। उसके हाथ में किसान की कमाई नहीं रहती। इस तरह, "गोदान" कृषकों की आर्थिक दुर्दशा को व्यवस्था की आलोचना में बदल देता है।

## जमींदारी, महाजन और ग्रामीण सत्ता-संबंध

ग्रामीण सत्ता का उद्घाटन किसी एक संस्था में सीमित नहीं है। किसानों पर शासन जमींदार, महाजन, पंडित,

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

पटवारी और पंचायत करते हैं। ये संस्थाएँ बाहर से अलग-अलग दिखती हैं, लेकिन एक-दूसरे को सहारा देती हैं। जमींदार ऋण और ब्याज, पंडित धार्मिक स्वतंत्रता, पटवारी प्रशासनिक-कानूनी दबाव और पंचायत सामाजिक दंड का प्रतीक है। किसान के पास श्रम और नैतिकता है, लेकिन उनके पास असली शक्ति नहीं है। इसलिए वह हर स्तर पर सहनशीलता, समझौता और समर्पण का बाध्य होता है (प्रेमचंद, 1936)। Sharma, 2008)

होरी पर लगाए गए जुर्माना केवल आर्थिक नहीं है; वे भी सामाजिक और नैतिक सजा हैं। जाति-पंचायत झुनिया को घर में रखना अपराध मानती है, हालांकि यह एक मानवीय निर्णय है। होरी का परिवार इससे और अधिक आर्थिक रूप से टूट जाता है। इस घटना से पता चलता है कि ग्रामीण सत्ता परंपरा और प्रभुत्व पर न्याय नहीं आधारित है। पीड़ित को बचाना नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षित रखना है। प्रेमचंद बिना किसी उपदेश के इस व्यवस्था की क्रूरता को उजागर करते हैं। पाठक स्वयं जानता है कि किसानों के लिए मानवीय व्यवहार करना भी खर्चीला होता है।

ग्रामीण सत्ता-संबंधों में धर्म और अर्थ का एकीकरण बहुत महत्वपूर्ण है। पंडित दातादीन जैसे योग्य लोग धार्मिक भाषा का उपयोग करते हैं, लेकिन उनका व्यवहार शोषणपूर्ण है। प्रेमचंद धर्म की आध्यात्मिक महत्ता पर नहीं, बल्कि उसके सामाजिक प्रयोग पर चर्चा करते हैं। किसान धर्म से आश्वासन चाहता है, लेकिन जब धर्म जाति, दंड, दक्षिणा और पाखंड से जुड़ता है तो शोषण का उपकरण बन जाता है। इस संदर्भ में, "गोदान" धार्मिक मान्यताओं और धार्मिक शक्ति के बीच अंतर बताता है। धार्मिक सत्ता होरी के विश्वास से लाभ उठाती है, हालांकि यह सच है (राय, 2021)। Sharma, 2008)

## 'मरजाद' का बोझ और किसान की आत्मिक त्रासदी

'मरजाद', या सामाजिक मर्यादा का विचार, 'गोदान' की सबसे मार्मिक कल्पना है। होरी बार-बार अपनी मर्यादा का बचाव करता है। उसके लिए जीवन भर समाज में सम्मानित रहना अनिवार्य है। वह जानता है कि कई रस्में और दंड उसके पास पैसे नहीं हैं, लेकिन वह उन्हें निभाने का प्रयास करता है। वह परिवार की गरिमा बचाना चाहता है, जाति से बाहर होना चाहता है और समाज की नज़र में गिरना नहीं चाहता। लेकिन दुःख की बात है कि यही मर्यादा उसकी आर्थिक और भावनात्मक हानि करती है (प्रेमचंद, 1936)।

यहाँ कृषक जीवन की दुःख मनोवैज्ञानिक हो जाती है। होरी केवल बाहरी शोषण से नहीं पीड़ित है; वह भी सामाजिक भय का शिकार है। वह अन्याय को जानता है, लेकिन खुलकर विरोध नहीं कर सकता। वह नैतिक है, जो उसे मनुष्य बनाता है, लेकिन उसे व्यवस्था के विरुद्ध खड़े होने से भी रोकता है। इसी जटिलता में प्रेमचंद की चरित्र-निर्माण कला दिखाई देती है। होरी न तो पूरी तरह से विजयी है और न ही पूरी तरह से कमजोर है। वह किसान समाज का प्रतिनिधित्व करती है जिसकी चेतना शोषण को महसूस करती है, लेकिन परंपरा से बाहर नहीं निकल पाती (शर्मा, 2008)। गोपाल, वर्ष 1964) मर्यादा-बोध की त्रासदी भी होरी की मृत्यु से जुड़ी है। वह जीवन भर गाय, धर्म, परिवार और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच एक संतुलन बनाने की कोशिश करता है। अंततः, उसका असली "गोदान" भी प्रतीकात्मक और दर्दनाक हो जाता है। वह जीवन भर गाय नहीं पाता, लेकिन मरते समय गाय की धार्मिक इच्छा बनी रहती है। यह अंत भारतीय किसानों की आर्थिक वास्तविकता और उनकी धार्मिक आकांक्षा के बीच की भयानक दूरी को दिखाता है। किसान धन चाहता है, लेकिन समाज उसे कम से कम गरिमा भी नहीं देता।

## धनिया: कृषक स्त्री की चेतना और प्रतिरोध

'गोदान' में धनिया सिर्फ होरी की पत्नी नहीं है; वह ग्रामीण स्त्री की साहसी चेतना को दर्शाती है। धनिया अधिक व्यावहारिक, स्पष्ट और प्रतिरोधी दिखाई देती है जब होरी सामाजिक मर्यादा और समझौते से चलता है। वह अन्याय को अन्याय बताने के लिए साहसी है। घर का श्रम, खेत की चिंता, बच्चों की जिम्मेदारी, सामाजिक अपमान, गरीबी और पति की असमर्थताधनिया इन सबका वास्तविक बोझ उठाती है। धनिया को प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन की नैतिक शक्ति के रूप में भी चित्रित किया (प्रेमचंद, 1936)। (राय, 2021)

स्त्री के जीवन में कृषि जीवन की पीड़ा और भी कठिन होती है। किसानों की गरीबी सिर्फ पुरुषों की समस्या नहीं रहती; वह बीमारी, असुरक्षा, भूख और सामाजिक अपमान में बदल जाती है। घर में भोजन की कमी, बेटी की शादी की चिंता, बहू-बेटे का संघर्ष या पंचायत का दंडस्त्री इन सबका व्यवहारिक समाधान करती है। इसलिए, धनिया का चरित्र उपन्यास का सबसे प्रभावशाली हिस्सा है। वह भावुकता से नहीं बल्कि वास्तविकता से काम करती है। उसका संघर्ष ग्रामीण स्त्री की चुपचाप शक्ति को उजागर करता है।

धनिया की मानवतावादी दृष्टि घर में झुनिया को स्वीकार करने की घटना से सामने आती है। यद्यपि समाज इसे जातिगत अपराध मानता है, धनिया इसे एक स्त्री की रक्षा का मुद्दा मानती है। यह कहानी "गोदान" केवल किसान-

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

उपन्यास नहीं है; वह मानवीय नैतिकता और स्त्री-अनुभव का भी उपन्यास बन जाता है। धनिया का संघर्ष बताता है कि कृषक जीवन की त्रासदी में महिलाएं भी शामिल हैं; उस दुःख को झेलते हुए भी वे परिवार, मानवता और प्रतिरोध को बचाने की कोशिश करती हैं। यहाँ प्रेमचंद की दृष्टि खासकर प्रगतिशील दिखाई देती है (शर्मा, 2008)।

## जाति-व्यवस्था, पंचायत और सामाजिक अपमान

'गोदान' में जाति ग्रामीण जीवन पर निर्भर है। जाति-मर्यादा भी आर्थिक रूप से कमजोर किसानों पर असर डालता है। झुनिया और गोबर के रिश्ते केवल व्यक्तिगत प्रेम या पारिवारिक परेशानियों से नहीं जुड़े रहते। जाति-समाज का मुद्दा बन जाता है। पंचायत का दंड बताता है कि जाति-व्यवस्था किसानों पर आर्थिक शोषण करती है। होरी झुनिया घर छोड़ना नहीं चाहता, लेकिन उसे समाज से बाहर निकालने का डर है। इस भय से वह आर्थिक रूप से और अधिक पीड़ित होता है ((प्रेमचंद, १३९६)

जाति-व्यवस्था भी गरीबों को बांटती है। किसान खुद शोषित है, लेकिन जातिगत मर्यादा उसे दूसरे शोषित लोगों से दूर रहने को बाध्य करते हैं। वर्गीय एकता इस तरह विकसित नहीं हो सकती। यहाँ प्रेमचंद का यथार्थवाद बहुत तीखा है। वे दिखाते हैं कि सिर्फ आर्थिक सुधार से किसानों को मुक्ति नहीं मिल सकती; सामाजिक संरचनाएं भी बदलनी चाहिए। गरीब किसानों से जाति, धर्म और मर्यादा के नाम पर धन, श्रम और आत्मसम्मान छीन लिया जाता है। यही कारण है कि जाति-प्रश्न किसान-प्रश्न से अलग नहीं है।शर्मा, २००८; ओरसिनी, २००२)

पंचायत का व्यवहार न्यायपूर्ण नहीं है, बल्कि सामाजिक नियंत्रण बनाएगा। वह शक्तिशाली लोगों को अधिक दंड देती है और कमजोरों को अधिक दंड देती है। होरी का परिवार सामाजिक रूप से कमजोर होने के कारण दंडित होता है। ग्रामीण लोकतंत्र की कल्पना को यह पंचायत की भूमिका बिगाड़ती है। प्रेमचंद ने गाँव को साधारण सामुदायिक जीवन का केंद्र नहीं समझा; उन्हें दिखाया कि सत्ता, भय और असमानता भी गाँव को चलाते हैं। यह दृष्टिकोण आज की सामाजिक आलोचना का एक महत्वपूर्ण पाठ है।

## गोबर: पीढ़ीगत संघर्ष, पलायन और नई चेतना

होरी का चरित्र गोबर से अलग है। वह परंपरागत नियमों को उतना नहीं मानता। झुनिया के साथ संबंध बनाकर गाँव से भाग जाना सामाजिक व्यवस्था से विद्रोह और अपनी जिम्मेदारी से पलायन भी है। उसमें नवीन किसान पीढ़ी की बेचैनी है। वह गाँव की जाति-व्यवस्था और नियमों को सहन नहीं करता। जब वह शहर जाता है, तो वह मजदूरी, धन, संगठन और नए संबंधों की दुनिया को जानता है। इस तरह गोबर ग्रामीण समाज में विकसित होती हुई बदलती चेतना को दिखाता है (प्रेमचंद, 1936)।

यह कहते हुए भी, गोबर एक पूरा समाधान नहीं है। शहर उसे अवसर देता है, लेकिन शोषण भी होता है। वहाँ मजदूरी की अस्थिरता, बाजार की कठोरता, मानवीय संबंधों में दूरी और वर्गीय तनाव हैं। प्रेमचंद गाँव और शहर को हल्की प्रतिक्रिया नहीं मिलती। शहर में पूँजीवादी संबंधों की जटिलता का कारण सामंती-जातीय शोषण है। किसान की समस्या हल नहीं होती जब गोबर पलायन होता है; इसके बजाय, वह शोषण के नए रूपों से परिचित होता है। प्रेमचंद का मानना है कि परिवर्तन सिर्फ स्थान बदलने से संभव नहीं है। संरचनात्मक परिवर्तन और सामाजिक चेतना दोनों आवश्यक हैं (शर्मा, २००८; ओरसिनी, २००४)

## ग्रामीण और शहरी कथा का अंतर्संबंध

'गोदान' में ग्रामीण और शहरी कथाओं का संयोजन है, जो इसकी एक बड़ी विशेषता है। मालती, मेहता, खन्ना और गोविंदी जैसे पात्र नगरीय मध्यवर्ग का सामना पूँजीवादी जीवन, आधुनिकता, स्त्री स्वातंत्र्य, वैवाहिक तनाव और नैतिक द्वंद्वों से होता है। यह भाग पहली बार किसान कथा से अलग लग सकता है, लेकिन गहराई से देखने पर यह ग्रामीण दुःख को बहुत सारे सामाजिक संदर्भ देता है। शहर में विचारधारा, सुधारवाद, आधुनिक शिक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर चर्चा होती है; गाँव में जीवन की कठोर आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियां हैं (Orsini, 2004)। (प्रेमचंद, १३९६) मेहता जैसे पात्र नैतिक और दार्शनिक प्रश्नों पर विचार करते हैं, जबकि होरी जैसे किसान जीवन की तत्कालीन समस्याओं से जूझते हैं। प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि इस अंतर से स्पष्ट होती है। शिक्षित मध्यवर्ग किसानों की समस्याओं को समझ सकता है, लेकिन उनका जीवन पूरी तरह नहीं जी सकता। शहर के पात्रों की समस्याएं भी वास्तविक हैं, लेकिन वे अधिक अस्तित्वगत और नैतिक हैं; गाँव की समस्याओं में रोटी, कर्ज, सम्मान और जीवित रहना शामिल हैं। इस तरह, उपन्यास भारतीय समाज में व्याप्त असमानताओं को और अधिक स्पष्ट करता है।

भारतीय समाज को एक-दूसरे से अलग-अलग भागों में नहीं विभाजित किया जा सकता है, क्योंकि ग्रामीण और शहरी कथाओं में अंतर्संबंध है। गाँव शहर को काम, खाना और लोग देता है; शहर शहर पर विचार, सत्ता और बाजार की नई छाप डालता है। प्रेमचंद इस कठिन संबंध को समझते हैं। इसलिए, "गोदान" की दुनिया होरी के घर तक सीमित नहीं रहती; यह भारतीय समाज को नैतिक रूप से संकट में डालता है। वास्तव में, ग्रामीण

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

किसानों की हालत राष्ट्रीय समाज की हालत बन जाती है।

## भाषा, शिल्प और यथार्थवादी प्रस्तुति

इसकी सामाजिक शक्ति गोदान की भाषा पर निर्भर है। प्रेमचंद की भाषा स्वाभाविक रूप से ग्रामीण जीवन, लोक-मानस, सामाजिक संबंधों और पात्रों की आंतरिक स्थिति को व्यक्त करती है। पात्रों की मानसिकता, सांस्कृतिक परिवेश और वर्गीय स्थान उनके संवादों से प्रकट होते हैं। भाषा अनावश्यक अलंकार या कृत्रिमता से मुक्त है। यही कारण है कि पाठक को लगता है कि वह एक वास्तविक ग्रामीण समाज में प्रवेश कर रहा है, न कि किसी काल्पनिक दुनिया में। प्रेमचंद का यथार्थवाद अनुभव पर अधिक आधारित है (प्रेमचंद, 1936; रूबिन, 1969 में) उपन्यास बहुस्तरीय है। प्रेमचंद खेत, घर, आँगन, पंचायत, बाजार, जमींदार-परिसर, शहर और मध्यवर्गीय बैठकों को एक व्यापक सामाजिक संरचना में जोड़ते हैं। 'गोदान' में कोई खलनायक नहीं है क्योंकि शोषण व्यवस्था का परिणाम है, नहीं किसी व्यक्ति की क्रूरता। यह कलागुण उपन्यास को साधारण दुःखद कहानी से ऊपर उठाकर सामाजिक महाकाव्य की तरह बनाता है। धीरे-धीरे होरी की छोटी-छोटी घटनाएँ एक बड़ा सामाजिक अर्थ विकसित करती हैं।

प्रेमचंद का कथन-शिल्प पाठक को निर्णय देने के बजाय सामाजिक प्रक्रियाओं को चित्रित करता है। वे शिक्षा नहीं देते, बल्कि पात्रों की क्रियाओं, बहसों और परिस्थितियों के माध्यम से व्यवस्था की समीक्षा करते हैं। होरी की असमर्थता, धनिया का विरोध, गोबर का पलायन, झुनिया की असुरक्षा, दातादीन का पाखंड और रायसाहब की विजयइन सबके माध्यम से पाठक खुद समझता है कि किसान जीवन को नुकसान पहुँचाने वाले कारक क्या हैं। यही आलोचनात्मक यथार्थवाद है जो प्रेमचंद को हिंदी साहित्य में विशिष्ट बनाता है (शर्मा, 2008)। (राय, 2021)

## होरी की त्रासदी: व्यक्तिगत असफलता नहीं, वर्गीय विफलता

होरी की मृत्यु को एक गरीब किसान की मृत्यु के रूप में पढ़ने से उपन्यास की व्यापकता कम होती है। होरी उन लाखों किसानों का प्रतिनिधित्व करता है जो मेहनत करते हुए भी न्याय, सुरक्षा और सम्मान से वंचित हैं। वह अपनी अपनी कमजोरी नहीं है; वह उस व्यवस्था की असफलता है जिसमें श्रम करने वाले और नैतिक लोग भी गरिमापूर्ण जीवन नहीं जी पाते। वह गलत नहीं होना चाहता है, लेकिन हर परिस्थिति उसे दोषी बना देती है, जो होरी का सबसे बड़ा दुःख है। वह अपने परिवार को बचाना चाहता है, लेकिन परिवार टूट जाता है। वह मर्यादा को बचाना चाहता है, लेकिन मर्यादा ही उसे तोड़ देती है ((प्रेमचंद, १३९६)

होरी का चरित्र विरोधाभासों से भरपूर मानवीय है। वह भयभीत है और उदार भी; धार्मिक है और पैसे की कमी से घिरा है; सामाजिक दबावों से नियंत्रित और परिवार-निष्ठ है। प्रेमचंद उसे एक आदर्श किसान के रूप में नहीं दिखाते। वे उसकी कमजोरियों को भी दिखाते हैं, लेकिन ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्य में। होरी की चेतना पुरानी है; ऐसे में वह तत्काल विद्रोह नहीं कर सकता। यह जटिलता है कि वह एक जीवंत साहित्यिक पात्र है। दया से अधिक गहरी सामाजिक समझ पाठक को मिलती है (गोपाल, 1964)। Sharma, 2008)

हर निर्णय होरी की वर्गीय स्थिति पर निर्भर करता है। उसकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब है कि कोई भी सामाजिक घटना उसकी अर्थव्यवस्था को खराब कर सकती है। गाय की क्षमता हर परिस्थिति से बड़ी है, चाहे वह झुनिया, विवाह, दंड, ऋण या बीमार हो। इस असमानता से पता चलता है कि गरीबी केवल आय की कमी नहीं है, बल्कि निर्णय लेने की क्षमता का भी अभाव है। विपन्न किसान भी स्वतंत्र रूप से नैतिक निर्णय नहीं ले पाते क्योंकि हर निर्णय से उनका आर्थिक दंड जुड़ता है। इसी कठोर सत्य को 'गोदान' साहित्यिक रूप देता है।

## 'गोदान' की समकालीन प्रासंगिकता

यद्यपि "गोदान" औपनिवेशिक भारत में लिखा गया था, फिर भी आज भी महत्वपूर्ण है। किसानों की समस्याएं बदल गई हैं, लेकिन मूल प्रश्न अभी भी हैं—ऋण, उत्पादन की लागत, बाजार की अनिश्चितता, सामाजिक सम्मान, पारिवारिक दायित्व, जमीन से जुड़ाव और ग्रामीण असुरक्षा आज बैंक, निजी ऋण, बाजार, बिचौलिये और कृषि-व्यापार की नई व्यवस्थाएँ हैं, जो पहले महाजन थे। आज लागत, मूल्य, जलवायु संकट और बाजार अस्थिरता का दबाव है, जबकि पहले लगान और जमींदारी का दबाव था। किसानों की असुरक्षा अभी भी सामाजिक बहस का मुख्य मुद्दा है।

'गोदान' हमें यह समझने में मदद करता है कि किसानों की समस्या सिर्फ आर्थिक नीति से नहीं जुड़ी है। यह भी प्रश्न है सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक गरिमा, सामुदायिक संबंध, पारिवारिक श्रम, स्त्री-अनुभव और व्यक्तिगत गरिमा। यदि किसान को केवल उत्पादन-इकाई मान लिया जाए, तो उसकी बहुत सी परेशानियों का पता नहीं चलेगा। प्रेमचंद एक पूरे मनुष्य के रूप में किसान को देखते हैं। उसके सपने, भय, धार्मिक आस्था, पारिवारिक प्रेम, सामाजिक आकांक्षाएँ और गरिमा की इच्छा हैं। "गोदान" आज भी इसी तरह जीवित है।

वर्तमान पाठक के लिए "गोदान" महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें किसान की समस्या को संरचना और भावना

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License



Publisher: SARC Publisher

दोनों स्तरों पर समझना सिखाता है। बिना व्यवस्था-बोध के करुणा भावुकता बन जाती है, इसलिए सिर्फ करुणा पर्याप्त नहीं है। गांधीजी करुणा को सामाजिक आलोचना में बदल देते हैं। वे दिखाते हैं कि किसान को न्याय और दया दोनों चाहिए; मदद ही नहीं, संरचनात्मक बदलाव चाहिए; धार्मिक सांत्वना ही नहीं, बल्कि धन और सामाजिक गरिमा भी चाहिए। इस अर्थ में, "गोदान" अभी भी भारतीय समाज का दर्पण है।

## निष्कर्ष

'गोदान' में कृषक जीवन की बहुत सी त्रासदी है। यह दुर्घटना गरीबी से शुरू होती है, लेकिन गरीबी पर खत्म नहीं होती। किसान जीवन को ऋण, महाजनी शोषण, जमींदारी का प्रभुत्व, जातिगत दबाव, धार्मिक रूढ़ि, पंचायत का दंड, सामाजिक मर्यादा, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और स्त्री की पीड़ा ने सब परेशान कर दिया है। इस दुर्घटना का केंद्र होरी है, लेकिन वह अकेला नहीं है। उसके पीछे पूरा ग्रामीण समाज है, जो शोषित है और अपनी नैतिकताओं से घिरे हुए हैं। प्रेमचंद ने इस जटिलता को सीधे नैतिक निर्णयों में नहीं बदला, बल्कि पाठक को इसके गहरे सामाजिक कारणों तक पहुँचाया है।

प्रेमचंद की महानता इस बात में है कि उन्होंने किसान को साहित्य का केंद्र बनाया और उसके जीवन को यथार्थ, करुणा और आलोचना से चित्रित किया। होरी की मृत्यु केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं है, बल्कि एक व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न है जिसमें काम करने वाले भी सम्मान से नहीं जी पाते। सामाजिक ढाँचा कृषक जीवन की दुर्दशा को जन्म देता है, जैसे कि धनिया का संघर्ष, झुनिया की असुरक्षा, गोबर का पलायन, पंचायत का दंड और महाजनी-जमींदारी गठजोड़। प्रेमचंद को किसानों की पीड़ा नियति नहीं लगती; वे उसे सामाजिक और मानवीय हस्तक्षेप की मांग करते हैं।

"गोदान" हिंदी साहित्य में किसान जीवन का सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास है क्योंकि यह किसान को दया का पात्र नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक शक्ति के रूप में चित्रित करता है। यह उपन्यास पाठक को न सिर्फ रुलाता है, बल्कि उन्हें सोचने पर भी मजबूर करता है कि किसानों की दुर्दशा का कारण कौन है—भाग्यशाली व्यक्ति, समाज या प्रणाली। प्रेमचंद की प्रतिक्रिया स्पष्ट है: जब तक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाएं न्यायपूर्ण नहीं होंगी, तब तक होरी की त्रासदी बार-बार होती रहेगी। इसी चेतना में 'गोदान' का स्थायी अर्थ है।

## संदर्भ सूची


1. प्रेमचंद. (1936). गोदान. वाराणसी: सरस्वती प्रेस / विभिन्न पुनर्मुद्रित संस्करण।
2. शर्मा, रामविलास. (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. राय, अमृत. (2021). प्रेमचंद: कलम का सिपाही. प्रयागराज/नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
4. Gopal, M. "Munshi Premchand: a literary biography." *(No Title)* (1964).
5. Orsini, F. "The Hindi public sphere 1920–1940: Language and literature in the age of nationalism." Oxford University Press, (2009).
6. Orsini, F. "Introduction to Oxford India Premchand." Oxford University Press, (2004).
7. Rubin, D. "The World of Premchand; selected stories." (1969).


**Source of support:** Nil; **Conflict of interest:** Nil.

**Cite this article as:**
डॉ नरेश कुमार वर्मा, "'गोदान' में व्याप्त कृषक जीवन की त्रासदी: एक समीक्षात्मक अध्ययन." *Sarcouncil Journal of Arts and Literature* 2.6 (2023): pp 33-38.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License



**Publisher: SARC Publisher**